साप्ताहिक
Live not just breaTHE

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/16-18

दि कार्मिक पोस्ट

वर्ष : 5, अंक : 30 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 18 से 24 मार्च 2020 पेज : 4 कीमत : 3 रुपये

कोरोना का स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था और सामाजिक ताने बाने पर असर

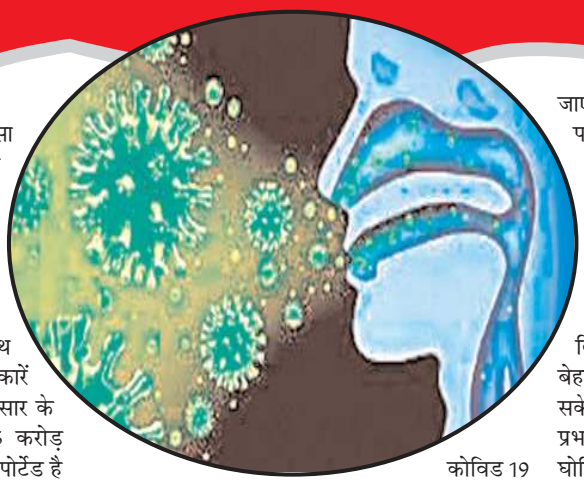

Covid 19 उर्फ कोरोना आधुनिक युग का ऐसा दैत्य प्रतीत हो रहा है जो सब कुछ लील जाना चाहता है . पर अंग्रेजी में जैसे कहावत है कि every cloud has a silver lining वैसे ही इस बीमारी की अपना take away है। Whole level पर पूरा विश्व एकजुट है इसके खात्मे के लिए और unit level पर परिवार और पड़ोस, जो बिखरे से थे एक साथ रह रहे हैं या कहें कि रहना पड़ रहा है. सभी सरकारें खासकर भारत सरकार चाक-चौबंद है इसके प्रसार के खिलाफ और इसी मुस्तैदी की वजह से 135 करोड़ जनसंख्या में से करीब 200 लोगों में संक्रमण रिपोर्टेड है जो अगर देखा जाए तो .000000148 प्रतिशत होता है जो देखने में नगण्य सा लगता है पर यदि हम कंफर्ट जोन में इसे ले लेते हैं तो शायद हमारी स्थिति भी दूसरे देशों के समान हो जायेगी।

आइए परिस्थिति का आकलन सिलसिलेवार करते हैं।

खतरा- हम यह सोच कर आराम से नहीं बैठ सकते कि हमारे यहां स्ट्राइक रेट कम है क्योंकि जनसंख्या घनत्व 464 है जो की सर्वाधिक प्रभावित देशों चाइना से 3 गुना, इटली से 2.3 गुना और ईरान से करीब 9 गुना ज्यादा है. इसलिए अगर यह नियंत्रित नहीं हुआ तो बेकाबू हो जाएगा. इसलिए हमें सावधानियां अभी ही युद्ध स्तर पर करनी होगी क्योंकि अभी हम stage-2 पर हैं यदि हम अभी रोकथाम प्रभावी तरीके से नहीं कर पाए तो फिर stage 3 और stage 4 तक पहुंचने में वक्त नहीं लगेगा और वह भयावह होगा।

एक आकलन के अनुसार आगामी डेढ़ वर्ष तक ये वायरस जिंदा रहेगा और करीब 50% जनसंख्या इसकी चपेट में होगी. हालांकि तब तक शायद? इसका टीका/दवाई भी उपलब्ध हो जाए पर तब तक यह विश्व अर्थव्यवस्था का काफी नुकसान कर चुका होगा।

वस्तु स्थिति- WorldOmeter report के अनुसार Covid 19 का 22 जनवरी 2020 को पहला case सामने आने के बाद आज 18 मार्च 2020 तक करीब 204610 केस है जिनमें स्वास्थ्य लाभ 82868 यानी 40.5% को, निगरानी में करीब 113072 लोग यानी 55.45% और मृत्यु करीब 8270 लोगों की यानी 4.04% की हुई है।

इसका यदि हम और आगे विश्लेषण करें तो वय 70 के ऊपर का डेथ रेट 8%, 50 से 70 के बीच की उम्र में करीब 2.4% , 40 से 50 वर्ष आयु के बीच करीब .4% 10 से 40 के बीच . 2% और उसके नीचे 0% है। इसके अलावा हमारे और आपके प्रतिरक्षा स्तर के ऊपर भी कोविड 19 का संक्रमण निर्भर करता है. एक बार ठीक हुए लोगों का इम्यूनिटी लेवल कम होता है और दोबारा संक्रमण की संभावना बढ़ जाती है. इसके लिए संक्रमण से बचाव और भी जरूरी हो जाता है।

यूं तो भारत सरकार ने कई कदम उठाए हैं इस को फैलने से रोकने के लिए पर थोड़े लंबे-लंबे डग और तेज कदम चाल की जरूरत है. Covid 19 कई गुना तेजी से फैलेगा, और यदि हम इसी स्पीड से चलते रहे तो वह हमें outgrow कर देगा. हमें कोरोना का डर नहीं बल्कि सावधानियों को गांव - देहात तक फैलाना है. डर का नतीजा हम देख चुके हैं सेंसेक्स की ऐतिहासिक गिरावट के रूप में. अर्थव्यवस्था पर गंभीर परिणाम होंगे यदि हम अभी नहीं संभले. यदि बाजार गिरेगा तो रोजगार पर असर पड़ेगा. नए रोजगार देना तो दूर, चलते व्यापार पर नकारात्मक असर से बेरोजगारी बढ़ेगी इससे कानून व्यवस्था पर भी असर आएगा और सामाजिक ताना-बाना तार-तार हो सकता है। एक काल्पनिक परिकल्पना के अनुसार, यदि खाने की कमी हुई रोजगार में गिरावट की वजह से, तो जैसा फिल्मों में दिखाया जाता है कि गरीब बेरोजगार, चोरी कर जेल जाता है कि कम से कम दो वक्त की रोटी तो नसीब होगी, उसी तरह यहां गरीब बेरोजगार संक्रमित हो क्वॉरेंटाइन होने की कोशिश करेगा कि उसका खर्चा सरकार उठाएगी. यह काफी भयावह सोच है पर यदि सच हो गई तो स्थिति काफी गंभीर हो जाएगी।

सुझाव-

सरकार-जागरूकता अभियान के साथ-साथ केंद्र तथा प्रदेश और केंद्र शासित प्रदेशों की सरकारों को मिलजुल कर काम करना होगा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए दिन प्रतिदिन संवाद स्थापित करना होगा - जिस तरह चुनावों में बूथ स्तर तक अंदर उतरकर, भेद कर तैयारी की जाती है उसी तरह कोरोना की जागरूकता और रोकथाम के लिए कार्य किया जाए इसके लिए सरकारी मशीनरी के साथ-साथ एनजीओ भी बूथ अनुसार नियुक्त किए जाएं. - किसी भी तरह की भीड़ कहीं भी एकत्रित न होने पाए. आयोजनों जैसे शादी, शव यात्रा, धार्मिक, रैली आदि पर तत्काल प्रभाव से रोक लगे. अभी यदि यातायात के साधन जैसे रेल, बस, हवाई जहाज आदि खाली जा रहे हैं तो दो स्थानों के बीच पब्लिक ट्रांसपोर्ट घटाए जाए इससे राजस्व बचेगा. - व्यापार को नुकसान के चलते यह वर्ष टैक्स हॉलिडे के रूप में घोषित किया जाए. - वर्क फ्रॉम होम को बढ़ावा दिया जाए और इसके लिए इंटरनेट सुविधाओं को बेहतर किया जाए, जो सभी वर्ग के लोगों को व्यस्त कर सके. - टूरिज्म और मैन्युफैक्चरिंग इंडस्ट्रीज सबसे ज्यादा प्रभावित होने की वजह से उनके लिए विशेष राहत पैकेज घोषित किए जाएं - राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री को नियमित अंतराल में टीवी पर आकर राष्ट्र के नाम संदेश में वस्तु तिथि और सरकार के उपायों के बारे में जानकारी देना चाहिए जब तक ये महामारी पूरी तरह खत्म नहीं हो जाती.

एनजीओ-

- अपने क्षेत्र के लोगों के बीच संभावित Covid 19 के मरीजों की जिनमें कॉमन फ्लू के लक्षण हो जांच करें.

- अपने निर्धारित क्षेत्र के लोगों के लिए entertainment, knowledge sharing और gathering का सप्ताहांत आयोजन करें जिससे लोग सामान्य बने रहें, नहीं तो जैसा एक टीवी रियलिटी शो में देखा गया, कि कुछ महीने बगैर बाहरी दुनिया से संवाद स्थापित करे हुए एक साथ रहते हुए 15 से 20 लोगों के व्यवहार में कितना असभ्य परिवर्तन आता है, फिर आजकल के एकल परिवार तो पांच से छह व्यक्तियों के ही है।

आप और हम-

जब तक जरूरत ना हो घर से ना निकले, बच्चों का यह समय बेकार ना हो इसके लिए स्कूल ऑनलाइन क्लासेज कराएं, अभिभावक ज्ञानवर्धक तथा कहानी की पुस्तक दें तथा बच्चों का आईक्यू लेवल बढ़े ऐसे कार्यक्रम दिखाएं और साथ खेलें बच्चों के। पड़ोसी ही परिवार इस विचार को सार्थक करते हुए अपने पड़ोसियों के साथ घुले मिले मधुर संबंध बनाए. जितना कम ट्रैवल करेंगे या जितने कम लोगों से मिलेंगे जुलेंगे उतना ही सुरक्षित रहेंगे। यदि हममें से कोई खांसी, जुकाम, बुखार या सांस की बीमारी से पीड़ित होता है तो खुद ही अपने आप को सबसे अलग कर ले, जब तक की पूरी तरह ठीक ना हो जाए याद रखें- सावधानी में ही सुरक्षा है।

Covid 19 को यदि हम वैश्विक आपदा की तरह ट्रीट करें और ऊपर लिखित उपाय पूरी शिद्दत से अपनाएं तो हम मिलकर इस बीमारी को हरा सकेंगे और वसुधैव कुटुंबकम को चरितार्थ सही रूप में कर सकेंगे।

- जय विश्व जय भारत!

पर्यावरण प्रदूषित कर रहे यूपी के पॉल्ट्री फार्म, पांच साल पुरानी गाइडलाइन लागू करेगा यूपीपीसीबी

उत्तर प्रदेश में मुर्गी पालन केंद्रों के लिए पर्यावरणीय मानकों की कोई ठोस गाइडलाइन न होने के कारण प्रदूषण जारी है। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) के 16 दिसंबर, 2019 को दिए गए सख्त आदेश के बाद उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (यूपीपीसीबी) ने केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) की 2015 की गाइडलाइन को ही राज्य में लागू करने का मन बनाया है।

नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) में हलफनामा दाखिल कर यह जानकारी दी है कि मुर्गी पालन केंद्रों के लिए 20 अक्तूबर, 2015 को सीपीसीबी की ओर से तैयार की गई पर्यावरणीय गाइडलाइन को ही जस का तस राज्य में लागू किया जा सकता है। इस गाइडलाइन को ही राज्य में लागू करने के लिए प्रस्तावित किया गया है।

याची सुंदर की ओर से पर्यावरणीय प्रदूषण फैलाने वाले मुर्गी पालन केंद्रों के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग उठाई गई थी। वहीं 28 अगस्त, 2019 को यूपीसीबी ने मुर्गी पालन केंद्रों के जरिए पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्या के सवाल पर अपनी रिपोर्ट में कहा था कि राज्य में एक लाख से कम पक्षियों वाले पालन केंद्रों को कंसेंट टू ऑपरेट (संचालन की अनुमति) की आवश्यकता नहीं है।

इसके बाद एनजीटी ने फटकार लगाते हुए अपने आदेश में कहा था कि यह स्पष्ट है कि मुर्गी पालन केंद्रों के जरिए हो रहे पर्यावरणीय प्रदूषण को लेकर राज्य के पास कोई गाइडलाइन नहीं है। न ही पॉल्ट्री फार्म के प्रदूषण को कम करने के लिए कोई उपाय किए गए हैं। पॉल्ट्री फॉर्म से होने वाले दूषित पानी डिस्चार्ज को लेकर भी कोई नियम कायदा नहीं है। इसलिए राज्य को सभी ऐसे मुर्गी पालन केंद्रों के लिए प्रदूषण नियंत्रण वाली गाइडलाइन विकसित करनी चाहिए।

सीपीसीबी ने पोल्ट्री फार्म स्थापित और संचालित करने के लिए 2015 की गाइडलाइन में प्रदूषण रोकथाम और बचाव के लिए कई मानक निर्देशित किए हैं। मसलन पोल्ट्री फार्म को भू-जल स्तर से 2 मीटर की ऊंचाई और फिर तल से 0.5 मीटर ऊंचाई पर बनाना है। पोल्ट्री फॉर्म से निकलने वाले गंदे पानी को एक टैंक में एकत्र करना है। वाटर बॉडीज से दस मीटर की दूरी कम से कम रखना है। पर्यावरण प्रदूषण की रोकथाम के लिए सीपीसीबी की ओर से स्थापना और संचालन के कई मानक तय किए गए हैं।

82 वर्ष में भी पर्यावरण संरक्षण की चिंता

अररिया। जिस उम्र में अधिकांश लोग सिर्फ भजन और भोजन करते हैं उस उम्र में भी यदि कोई बुजुर्ग पर्यावरण संरक्षण के लिए काम करे तो निश्चय ही प्रशंसनीय कार्य माना जा सकता है। जोकीहाट प्रखंड क्षेत्र के जहानपुर गांव के 82 वर्षीय वयोवृद्ध समाजसेवी ताराशंकर झा पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण के लिए मुहिम चला रहे हैं।

उन्होंने बताया कि पर्यावरण के साथ छेड़छाड़ के कारण प्रकृति प्रतिकूल हो रही है। लेकिन इसे हम गंभीरता से नहीं लेते हैं। आज कोरोना जैसे वायरस से पूरी दुनिया दहशत में है। यह पर्यावरण के साथ शत्रुता का व्यवहार से ही उत्पन्न हुआ है। इस तरह प्रकृति के अनुकूल काम नहीं करेंगे तो हमें और भी बर्बादी झेलनी पड़ सकती है।

उन्होंने कहा कि हमारा समय गुजर गया अब नई पीढ़ी को स्वस्थ जीवन के लिए पर्यावरण संरक्षण के लिए आगे आना होगा। ताराशंकर अबतक फलदार और छायादार करीब पांच सौ पौधे लगा चुके हैं। उनका कहना है कि पौधे हम लगाते हैं। लेकिन इससे सभी को लाभ मिलता है। ताराशंकर के इस पहल की लोग सराहना करते हैं। अबतक वे पांच सौ से अधिक पौधारोपण कर चुके हैं। इस कार्य में उनके पुत्र किशोर मोहन झा भी उनका बखूबी साथ देते हैं। किशोर झा ने बताया कि उनके पिताजी वर्ष 1999 में सरकारी सेवा से निवृत्त हुए। सेवानिवृत्त होने के बाद से ही उन्हें वृक्षारोपण के प्रति लगाव रहा है। अबतक सैकडों पौधे लगा चुके हैं। उनका यह कार्य लोगों के लिए एक मिसाल बन गई है। उन्हें देख और भी दर्जनों लोग पौधारोपण कार्य में जुटे हैं। उनके इस प्रयास से सरकार के हरियाली मुहिम को भी सहयोग मिल रहा है।

पोलैंड के पर्यावरण मंत्री भी हुए कोरोना वायरस से संक्रमित

नई दिल्ली। कोरोना वायरस से संक्रमित पोलैंड के पर्यावरण मंत्री माइकल वोस पृथक रहने के बाद अब बेहतर महसूस कर रहे हैं। करीब 3.8 करोड़ लोगों की आबादी वाले यूरोपीय संघ राष्ट्र में कोविड-19 से तीन लोगों की जान जा चुकी है और 156 लोग संक्रमित पाए गए हैं। एहतियात के तौर पर देश ने विदेशी यात्रियों के लिए अपनी सीमाएं सील करने के साथ ही स्कूल भी बंद कर दिए हैं।

वोस (29) ने ट्वीट किया, देश के एक वन्य कर्मचारी जिससे मैंने मुलाकात की थी उसके कल (रविवार को) कोरोना वायरस से संक्रमित होने की पुष्टि हुई, जिसके बाद मैंने खुद को अलग रखा और जांच करवाई। उन्होंने कहा, जांच में मैं भी संक्रमित पाया गया। मैं ठीक महसूस कर रहा हूं। मैं अपने चिकित्सा कर्मियों का धन्यवाद करता हूं और हर बीमार व्यक्ति के साथ एकजुटता व्यक्त करता हूं। फ्रांस के संस्कृति मंत्री फ्रैंक रीस्टर, स्पेन की समता मंत्री इरेन मोंटेरो और ईरान की उपराष्ट्रपति मासूमेह इब्तिकार जैसे कुछ अन्य वैश्विक नेता भी इस बीमारी की चपेट में आए हैं।

भारत की बात करें तो आज यहां कोरोना वायरस से तीसरी मौत हुई है। मुंबई में 64 वर्षीय मरीज की जान चली गई। वहीं, भारत में कोरोना वायरस के पॉजिटिव मामलों की संख्या बढ़कर 128 हो गई है। मंगलवार को दिल्ली से सटे नोएडा और कर्नाटक में नए मामले सामने आए। नोएडा में दो लोगों के कोरोना वायरस से संक्रमित होने की पुष्टि हुई है। इससे पहले बीती रात कर्नाटक में कोरोना के दो पॉजिटिव मामले सामने आए थे कर्नाटक के मंत्री ने कहा था कि राज्य में कोरोना वायरस के दो नए मामले सामने आए हैं। एक बेंगलुरु और एक कलबुर्गी में पॉजिटिव मरीज पाया गया है। दोनों का इलाज जारी है।

शिशु मधुमक्खियों के मस्तिष्क के विकास को नुकसान पहुंचा रहे हैं कीटनाशक

मधुमक्खियों के लार्वा चरण के दौरान कीटनाशकों के संपर्क में आने से उनके मस्तिष्क के विशेष भागों पर इसका खतरनाक असर पड़ता है। इसका पता इंपीरियल कॉलेज लंदन के शोधकर्ताओं ने माइक्रो-सीटी स्कैनिंग तकनीक का इस्तेमाल करके पता लगाया है।

अधिकतर अध्ययनों ने वयस्क मधुमक्खियों पर कीटनाशक के खतरों का परीक्षण किया है, क्योंकि ये सीधे कीटनाशक से दूषित फूलों का रस (मकरंद) और पराग इकट्ठा करते हैं। लेकिन नए अध्ययन से पता चला है कि कॉलोनी में वापस लाए गए दूषित भोजन के प्रभावों से शिशु मधुमक्खियों के विकास पर असर पड़ता है, जिससे वे बड़े होकर जीवन में सही ढ़ंग से कार्य नहीं कर पाती हैं।

इंपीरियल में जीव विज्ञान विभाग के प्रमुख शोधकर्ता डॉ. रिचर्ड गिल ने कहा कि मधुमक्खियों की कॉलोनी सुपरऑर्गेनिज्म के रूप में कार्य करती हैं, इसलिए जब कोई भी विष कॉलोनी में प्रवेश करता है तो इसका सीधा असर शिशु मधुमक्खियों पर पड़ता है। यह अध्ययन प्रोसीडिंग्स ऑफ रॉयल सोसायटी बी नामक पत्रिका में प्रकाशित हुआ है।

जब युवा मधुमक्खियां कीटनाशक-दूषित भोजन करती हैं, तो इनके मस्तिष्क के कुछ हिस्से कम विकसित होते हैं, जिसके कारण वयस्क मधुमक्खियां सही ढ़ंग से काम नहीं कर पाती हैं, यह ऐसा प्रभाव होता है जो हमेशा बना रहता है, जिसे ठीक नहीं किया जा सकता है।

इन निष्कर्षों से पता चलता है कि कैसे कीटनाशकों के संपर्क में आने से कॉलोनियां प्रभावित होती हैं, क्योंकि जब युवा मधुमक्खियां वयस्क होती हैं तो वे ठीक से भोजन करने में सक्षम नहीं होती हैं। यह अध्ययन कीटनाशकों के उपयोग पर जरुरी दिशानिर्देशों पर प्रकाश डालता है।

कॉलोनी में फूलों के रस के बजाय न्यूटीनोटिनोइड्स नामक कीटनाशकों के एक वर्ग का छिड़काव किया गया था। ये कीटनाशक कुछ यूरोपीय संघ के भीतर प्रतिबंधित हैं लेकिन दुनिया भर में व्यापक रूप से उपयोग किए जाते हैं। मधुमक्खी के अपने प्यूपा से युवा और युवा से वयस्क होने के दौरान, उनकी सीखने की क्षमता का तीन दिनों के बाद और 12 दिनों के बाद जांच की गई, और कुछ ने प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय में माइक्रो-सीटी तकनीक का उपयोग करके उनके दिमाग का चित्र खीचा गया।

इन परिणामों की तुलना उन कॉलोनियों के युवाओं से की गई, जिन्होंने कोई कीटनाशक भोजन नहीं किया था, और जिन्हें एक बार वयस्क होने के बाद ही कीटनाशक खिलाया गया था।

जब वे लार्वा के रूप में विकसित हो रहे थे, तब मधुमक्खियों को कीटनाशक खिलाया गया था, उनमें सीखने की क्षमता में काफी कमी थी, जबकि युवा अवस्था में कीटनाशक खिलाने पर असर लार्वा अवस्था की तुलना में कम दिखा।

शोधकर्ताओं ने अलग-अलग कॉलोनियों से करीब 100 मधुमक्खियों के दिमाग को स्कैन किया। जिन मधुमक्खियों को कीटनाशकों के संपर्क में लाया गया था, उनके मस्तिष्क का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बहुत छोटा था, जिसे मशरूम बॉडी के रूप में जाना जाता है। मशरूम बॉडी या कॉर्पोरा पेडुंकलता कीड़ों के मस्तिष्क में बनी संरचनाओं की एक जोड़ी होती है।

मशरूम बॉडी कीड़ों में सीखने की क्षमता के लिए जाना जाता है, और छोटा मशरूम बॉडी होने का मतलब है कि वह कम सीखेगा जिससे उसका कार्य सही से नहीं हो पाएगा।

प्रमुख शोधकर्ता तथा इंपीरियल में जीव विज्ञान विभाग से डॉ. डायलन स्मिथ ने कहा कि इस बात के बहुत अधिक सबूत हैं कि मधुमक्खियों के कॉलोनियों के अंदर कीटनाशक बड़ रहा है। अध्ययन के अनुसार से ऐसे वातावरण में पाले जा रहे मधुमक्खियों को होने वाले खतरों का पता चलता है। कीटनाशकों के संपर्क में आने पर कॉलोनी में आगे चलकर मधुमक्खियों की संख्या कुछ सप्ताह बाद प्रभावित हो सकती है।

एमओसीसीएई ने बच्चों का पर्यावरण पुरस्कार शुरु किया

दुबई। हर साल मनाया जाने वाला अमीराती बाल दिवस जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण मंत्रालय, मातृत्व और बचपन के लिए सर्वोच्च परिषद के साथ साझेदारी में आज पर्यावरण स्थिरता में युवा पीढ़ी को बढ़ावा देने के लिए बाल पर्यावरण पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उद्घाटन कन्जर्विंग बायोडायवर्सिटी विषय के तहत आयोजित किया गया। प्रतियोगिता यूएई के सभी नागरिकों और निवासियों के लिए खुली है। इसमें 8 से 12 वर्ष के बच्चे और 13 से 17 वर्ष के बच्चे भाग ले सकते हैं। इस पुरस्कार में पांच श्रेणियां शैक्षिक वीडियो, जागरूकता अभियान, तकनीकी या वैज्ञानिक परियोजना, लघु कहानी और कलाकृति शामिल हैं। जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण मंत्री डॉ. थानी बिन अहमद अल जायोदी ने कहा, युवाओं को सशक्त बनाने और देश की स्थिरता ड्राइव में शामिल करने के लिए बुद्धिमान यूएई नेतृत्व की दृढ़ प्रतिबद्धता के अनुरूप हम युवा लोगों में पर्यावरण जागरूकता बढ़ाने और उन्हें कम उम्र में स्थायी व्यवहार अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए काम करते हैं। उन्होंने कहा, इस संदर्भ में हमने बच्चों के पर्यावरण पुरस्कार का शुभारंभ किया। यह पहल सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि नई पीढ़ी युवाओं और प्रकृति के बीच एक कड़ी का पोषण करे, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि नई पीढ़ी इस धरती पर पर्यावरण की रक्षा करने और हर जीवित जीव को बनाए रखने के महत्व को समझे। वहीं, सुप्रीम काउंसिल फॉर मदरहुड एंड चाइल्डहुड की महासचिव रीम अल फलासी ने कहा, पर्यावरणीय स्थिरता जीवन की गुणवत्ता और सार्वजनिक स्वास्थ्य और सुरक्षा के मुख्य स्तंभों में से एक है। पर्यावरण की देखभाल एक अंतर्निहित दृष्टिकोण है, जिसे यूएई के संस्थापक पिता स्वर्गीय शेख जायद बिन सुल्तान अल नहयान द्वारा चैंपियन बनाया गया है और यूएई के राष्ट्रपति हिज हाइनेस शेख खलीफा बिन जायन अल नहयान द्वारा आगे बढ़ाया गया है।

दम तोड़ता पर्यावरण, संतुलन खोती प्रकृति..!

देश में कई जगह बेमौसम झमाझम बारिश, ओले, बिजली का कहर जारी है। ठण्ड के तेवर ठण्डे पड़ने के साथ वापस अपने शवाब पर आ गए हैं। तमाम बीमारियों सहित मुसीबतें पीछा नहीं छोड़ रही हैं। इंसान और जानवर सहित वनस्पति तक सभी परेशान हैं। बारिश से फसलों को नुकसान तय है और किसानों के माथे पर फिर मायूसी भरी चिन्ता झलक रही है। सरसों, अरहर, चना की फसलों में लगे फूल गिर गए हैं। मसूर,अरहर के साथ ही गेंहू का अब क्या होगा इसकी चिन्ता में अन्नदाता की सुबह का चैन रात की नींद सब कुछ हराम है।

बारिश का कहर ऐसा कि गेहूं की खड़ी फसलें भी जहां-तहां लोट रही हैं वहीं सरसों के गलने के खतरे तय माने जा रहे हैं गन्ने की बसंतकालीन बुवाई में देरी सिर पर है। आम, मुनगा (सहजन) के फूल अभी तो आए ही थे और दम तोड़ने को मजबूर हो रहे हैं। जनवरी में आलू की फसल पर इसी बेमौसम बारिश ने गजब का कहर ढाहाया जिससे पत्तियां ही झड़ गईं अब फसल से क्या उम्मीद?

यह सारा कुछ जलवायु परिवर्तन का असर है जिसके लिए कहीं न कहीं आज की तथा कथित विकसित सभ्यता जिम्मेदार है। अंधाधुंध प्राकृतिक स्त्रोतों का दोहन, यहां तक भूगर्भीय जल की भी बेहिसाब निकासी, जमीन में दफन तथा धरती व पहाड़ पर मौजूद खनिज, मृदा और दूसरे तत्वों का ताबड़ तोड़ उत्खनन कहीं न कहीं प्रकृति के संतुलन को प्रभावित कर रहा है। इसके चलते जहरीली गैसों का उत्सर्जन भी काफी हद तक बढ़ गया है नतीजन अंधाधुंध ग्लोबल वार्मिंग बढ़ गई है और हम बेफिक्र हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं। कितनी अंजान और अनाम बीमारियां दस्तक दे चुकी हैं। हर साल दर्जनों नए और दिनों दिन गंभीर होते रोगों का नाम सुनने को मिलता है। लेकिन हम फिर भी बेफिक्र हैं।

धरती पर जीवन को बचाने के लिए कब गंभीर होंगे नहीं पता। लेकिन इतना जरूर पता है कि जब जागेंगे तब तक काफी देर हो चुकी होगी और हम अपनी आने वाली पीढ़ी के साथ खुले तौर पर नाइंसाफी के लिए जिम्मेदार होंगे।

आज प्रकृति ऐसे बदले स्वरूप में देखने को मिल रही है जिसको किसी ने कभी सोचा नहीं होगा। अब तो स्थितियां इतनी बदतर हो गई हैं कि मौसम के छिन-पल बदलते मिजाज का कोई भरोसा नहीं। कई बार तो आधुनिक विज्ञान, सैटेलाइट और टेक्नालॉजी भी गच्चा खा जाते हैं। लेकिन फिर भी प्रकृति की वेदना को हम अनसुना करते ही जा रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र ने बीते वर्ष जलवायु परिवर्तन पर एक सम्मेलन किया था जिसमें मानव जनित जलवायु परिवर्तन पर चिन्तन हुआ।

सम्मेलन में जलवायु परिवर्तन के प्राकृतिक कारणों में अंतर बताने की कोशिश के साथ ही इसे परिभाषित भी किया गया जिसमें इसके लिए सीधे-सीधे हमारे द्वारा पैदा किए गए हालातों को दोषी बताया गया। बढ़ती गर्मी और बारिश के बदलते पैटर्न को लेकर अलग चिन्ताएं जताई जा रही हैं। लेकिन यह भी सच है कि बदलती जलवायु का सीधे तौर पर हम सबके जीवनयापन पर तो असर पड़ता ही है साथ ही खाद्य सुरक्षा पर भी।

रकृति पहले तो ऐसी न थी। आखिर इस पर हम कब मंथन, चिन्तन करेंगे और नतीजे पर पहुंचेंगे। समय तेजी से बीत रहा है। बदलाव दिन प्रतिदिन साफ दिख रहा है। बेमौसम बारिश और बर्फबारी,

सूखा, अतिवृष्टि की घटनाएं जैसे आम हो गईं हैं। यह सीधे तो नहीं लेकिन परोक्ष रूप से धरती पर सभी के जीवन चाहे मानव हो, पशु, पक्षी, कीट, पतंग या फिर वनस्पति ही क्यों न हो प्रभावित कर रही है। साफ दिख रहा है कि चाहे जीव, जन्तु हों या वनस्पति सभी का जीवन चक्र प्रभावित हो रहा है।

सबका संतुलन बिगड़ रहा है।

पहले ऐसा नहीं था भरपूर हरे-भरे जंगल और साफ, सुथरी नदियां थीं। लेकिन नदियों का सीना छलनी करने वाले, पहाड़ों को तोड़कर रेगिस्तान बनाने वाले और जंगलों को काट कर पर्यावरण बिगाड़ने वाले माफिया इस कदर और इतने बेखौफ नहीं थे जैसा अभी हैं। लगभग हर गांव के पोखर, तालाब, कुंए, झरने वहां की शान होते थे। पानी की कोई कमीं नहीं थी। नदियों के किनारे हरियाली और साग-सब्जी की बहार हुआ करती थी। बारहों महीने बहने वाले नाले थे। अब यह सब एक सपने सा हो गया है।

जहां पर्यावरण को हमने भरपूर चोट पहुंचाई वहीं आबादी पर भी कोई नियंत्रण है ही नहीं। केवल तीन दशकों में लगभग 35 प्रतिशत आबादी बढ़ी है जिसका यही अनुपात रहा तो संसाधनों की किस तरह की कमीं होगी सोचकर ही डर लगता है। इतना ही नहीं आबादी के साथ-साथ प्रकृति पर अत्याचार भी उसी अनुपात में बढ़े हैं। उसी का नतीजा है कि कहीं बाढ़, कहीं गर्मी तो कहीं सर्दी का सितम कहर बरप रहा है।

आज धरती का बुखार असामान्य है तो पसीने के रूप में बेमौसम की बारिश कब आ जाए नहीं पता। आसमान का भी मिजाज अलग काला,पीला हो रहा है। पानी खत्म हो रहा है। बची खुची बारिश को सहेजने को लेकर भी हम लापरवाह हैं। न कोई नीति है न ही किसी तरह की राजनीतिक सोच। धरती और पर्यावरण को बचाने की चिन्ता की रेंगती रफ्तार बहुत धीमी और दिखावटी है। हमारी आने वाली पीढ़ी पर्यावरण से ज्यादा अपने अस्तित्व को लेकर जूझ रही है। ऐसे में बिगड़ते मौसम पर कौन, कब और कितनी चिन्ता करेगा?

यहां तो हम आज की चिन्ता में अपनी आने वाली पीढ़ी के कल का सर्वनाश लगातार करते जा रहे हैं। जल स्त्रोत दम तोड़ रहे हैं लेकिन धरती के गर्भ में बचे पानी को भी गहरे ट्यूब वेल से कदम-कदम पर पानी निकालने की होड़ में पीछे नहीं है। बारिश के पानी को सहेजने खातिर कोई जरूरी कोशिशें भी नहीं हो रही है। पहाड़ गिट्टियों की तो नदियां रेत का जरियां बन जेब भरने का जुगाड़ गईं है। इनके अंधाधुंध दोहन से क्या मिला या प्रकृति ने क्या खोया इसकी चिन्ता या हिसाब की फिक्र किसी को नहीं है। सच तो यह है कि पर्यावरण खातिर जो भी कुछ हो रहा है वह कागजों में तो सुव्यवस्थित है लेकिन हकीकत में नदारत है।

साफ हवा तक नसीब में नहीं रह गई है। बड़े शहर, इफरात वाहन, कारखानों के प्रदूषण, कूड़ा-करकट के जलते धुंए तो गांव व कस्बे की नरवाई, पराली जलाने के अलावा साफ हो चुके जंगलों के कारण स्वच्छ न होती दूषित हवा व खत्म होती हरियाली से अनियंत्रित होते तापमान से सभी हलाकान हैं। सब कुछ जानते हुए भी खराब हो चुके वायुमण्डल को लगातार खराब किए जा रहे हैं। अपनी खुद की भावी पीढ़ी के बारे में सोचने की न किसी को चिन्ता है और न कोई तैयार ही दिखता।

केन्द्र और राज्य सरकारें पर्यावरण बचाने खातिर सख्ती करती हैं तो स्वागत योग्य होगा। नागरिकों के साथ-साथ प्रशासनिक मशीनरी और जनप्रतिनिधियों पर भी बराबर की जिम्मेदारी और कार्रवाई हो तभी इसके नतीजे निकलेंगे वरना अफसरशाही के झूले में योजनाएं झूलेंगी और सरकारें आती जाती रहेंगी. धरती, आसमान, जल, जंगल, जमीन, पहाड़ यूं ही विकास के नाम पर दम तोड़ते रह जाएंगे। बेमौसम बारिश और गर्मी की तबाही का आलम जल्द ही हमारी आदतों में शुमार हो जाएगा लेकिन इस बात से बेफिक्र ही रहेंगे कि यह हमारी सेहत के कितने घातक हैं?

निश्चित रूप से यह अनदेखी एक दिन वो भयावह महामारी मरेगी जिस पर नियंत्रण का तरीका तथा कथित विकसित या विकासशील किसी भी देश या ताकत के पास नहीं होगा. लेकिन सवाल वही कि मौत के मुंहाने बैठकर भी हम बेफिक्री और ढ़िठाई के साथ केवल आज में जीकर अपनी भावी पीढ़ी के साथ कितना बड़ा छल किए जा रहे हैं और बेमौसम की बारिश और गर्मी को कोस रहे हैं। आइए बसंत में ठण्ड, सूखे में बारिश और गर्मी में झुलसन के बीच जीने की आदत डाल लें पता नहीं कल कहीं धधकती ज्वाला में भी जीने की मजबूरी हो?

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008